हुसैन-हुसैनः एक परिचय

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
अनुवादक - बी० ए० नक़वी नसीराबादी

परिचय की आवश्यकता उनके लिए है जो मोहर्रम के अवसर पर हुसैन-हुसैन की आवाज़ें सुनते हैं, पत्र-पित्रकाओं के मुख्य प्रकाशनों पर मोहर्रम में ''हुसैन नम्बर'' लिखा देखते हैं, मगर जानते नहीं कि यह हुसैन कौन है? या उनके लिए किसी घोड़े (शबीहे ज़ुलजनाह) को इस शान से देखते हैं कि बागें कटी हुई हैं, ख़ून बहा हुआ है, शरीर पर जा बजा तीर लगे हुए हैं अथवा किसी ताबूत को रक्तमय चादर से ढका हुआ देखते हैं और उनकी समझ में नहीं आता कि यह किस की यादगार मनायी जा रही है।

पहली दशा में नाम से व्यक्ति की तलाश होती है और दसूरी दशा में गुणों से व्यक्ति की खोज की तड़प उत्पन्न होती है और यही उपकरण अज़ाए मुहर्रम का वह उज्जवल मार्ग हैं, जिसके सुरक्षित रखने को हुसैन के अनुयायी अपने जीवन का सबसे बड़ा और बहूमूल्य ख़ज़ाना समझते हैं और विरोधीगण इनके मुक़ाबले में अपनी बुरी भावनाओं और अनुचित नीतियों को अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य समझते हैं।

यह परिचय का वह साधारण पहलू है जिसके लिए अधिक सोच-विचार की आवश्यकता नहीं, परन्तु अगर तीव्र दृष्टि से देखा जाय तो जो हज़रत हुसैन इब्ने अली अलैहिस्सलाम के नाम का स्मरण करते हैं और आप के व्याख्यान को दिनों-रात आरम्भ रखते हैं। उन्हें भी प्रायः आपके गौरव का पूरा ध्यान और आपके उस अमर कारनामे की गम्भीरताओं का समुचित ज्ञान नहीं है। इसलिए वह स्वयं भी परिचय के आश्रित हैं। मगर यह पहलू परिचय का वह पहलू है, जिसका मूल्य उसी समय अदा किया जा सकता है जब परिचय कराने वाला स्वयं भी इमाम हुसैन[अ०] के विषय में पूर्ण जानकारी रखता हो और यह दावा करना माया जाल में फंसे हुए एक मनुष्य के लिए कोई आसान बात नहीं है, बल्कि एक कठिन मार्ग है, जिसके कि तै करने का इस समय मैं अपने आप में शक्ति नहीं अनुभव करता और न इस संकुचित भाषण का निश्चित समय ही इसके व्याख्यान के लिए प्रर्याप्त हो सकता है।

हाँ, केवल यह परिचय उन्हीं लोगों के वास्ते है, जो हज़रत इमाम हुसैन[अ०] के नाम से बिल्कुल ही अनभिग है। ऐसा तो प्रायः कोई शिक्षित न होगा, जिसने इस्लाम का नाम न सुना हो, धार्मिक दृष्टिकोण से इस्लाम धर्म संसार के सृष्टि से है और लगभग सभी धर्म प्रचारक ख़ुदा की ओर से इसी धर्म के प्रचार के लिए आये। मगर इस धर्म का नाम इस्लाम और इसके अनुयायियों का नाम मुस्लिम सब से पूर्व हज़रत इब्राहीम ने रखा और इस कारण से वह मुसलमानों को सबसे प्रथम पूर्वज समझे जा सकते हैं। हज़रत इब्राहीम के दो बेटे थे। इसहाक़ और इस्माईल। हज़रत इस्हाक़ सिलसिलए बनी इस्राईल के प्रथम पूर्वज थे। जिनमें हज़रत मूसा और हज़रत ईसा प्रसिद्ध धर्म प्रचारक हुए हैं और इन्हीं पुरुषों के समय में तौरेत, इन्जील और ज़बूर जैसी आसमानी पुस्तकें प्रकट हुईं। दूसरे हज़रत इस्माईल थे, जिन्हें आप के पिता हज़रत इब्राहीम ने आप की माता हाजरा के संग बालकाल्य अवस्था में ही मक्का पहुँचा दिया था। जिसमें ख़ान-ए-काबा स्थित है और ख़ान-ए-काबा को बनाने वाले यही पिता-पुत्र इब्राहीम और इस्माईल हैं।

इस्माईल के बारह पुत्र थे उनमें साबित और

क़िदार की सन्तान हिजाज़ में आबाद हुई और क़िदार की सन्तान में अदनान उत्पन्न हुए। जिनकी सन्तान में नज़र पुत्र कनाना और कथनानुसार क़हर पुत्र मालिक पुत्र नज़र और कथनानुसार क़ुसै पुत्र किलाब पुत्र मुर्रह पुत्र काब पुत्र लुई पुत्र ग़ालिब पुत्र फ़हर की सन्तान क़ुरैश के नाम से प्रसिद्ध हुई।

क़ुसै पुत्र किलाब ने बड़ा नाम उत्पन्न किया और बड़े नामी काम किये। उन्होंने विधान भवन (दारुन्नदवह) के नाम से एक भवन बनवाया। जिसमें पंचायती कार्य किये जाते थे। जनता के रहन-सहन, कर की वसूली और हाजियों के खाने-पीने आदि का प्रबन्ध किया तथा विधान आदि पारित किये। उन्होंने शराब-पान को बुरा बताया तथा उसकी बुराइयों को उचित ढंग से स्पष्ट किया। क़ुसै के पुत्रों में अब्दे मनाफ़ अपने कार्य और गुणों के कारण अपने पूर्वजों के उचित उत्तराधिकारी थे और इनके पुत्रों में हाशिम योग्य और प्रभावशाली थे। काबे की पवित्र सेवायें, हाजियों के खाने-पीने और रहने आदि का उत्तरदायित्व भी आपके ज़िम्मे था, जिसे आपने बड़ी योग्यता से निबाहा। इन में मुक़ाबले में उमैया पुत्र अब्दुल शम्स जो बनी उमैया का पूर्वज था। असफ़ल होकर और अपने देश को छोड़कर शाम की ओर चला गया और वहीं पर अपना मोर्चा लगाया।

हाशिम इनकी पदवी इस कारण से हुई कि इन्होंने अकाल के समय में मक्का के निवासियों को रोटियों के टुकड़े शोरबे में भिगो कर खिलाये! अरबी में हशम चूरा करने वाले को कहते हैं। हाशिम के बेटे अब्दुल मुत्तलिब थे जो उच्चता, तेजस्व और प्रसिद्धि में अपने पूर्वजों से भी आगे थे और सय्यदुल बतहा के नाम से प्रसिद्ध हुये, जो उनकी सन्तान में शेष रह गया और उन्हीं की सन्तान है जो सादात कहलाती है।

अब्दुल मुत्तलिब के दस पुत्रों में से दो पुत्र अब्दुल्लाह और अबूतालिब थे। अब्दुल्लाह के पुत्र इस्लाम धर्म के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा थे, जिन्होंने संसार को एकेश्वरवाद की शिक्षा दी और मूर्ति पूजा, अधिकार पूजा, धन पूजा, बल्कि हर उस वस्तु के पूजा के प्रति विरोध प्रकट किया जो अल्लाह की ओर से ध्यान हटाकर अपनी ओर आकर्षित करती है।

अबुतालिब के सुयोग्य पुत्र हज़रत अली थे। जो इस्लाम के प्रचार में मुहम्मद साहब के साथ सदैव रहते थे। यहाँ तक कि जब इस्लाम के विरोधियों ने सैनिक शाक्ति के साथ मुसलमानों पर चढ़ाई की और बद्र व ओहद, ख़न्दक़ और ख़ैबर की लड़ाइयाँ हुईं तो इन सभी युद्धों में न्याय व सच्चाई की ईश्वरीय शक्ति के साथ हज़रत अली की तलवार थी, जो हर स्थित में इस्लाम की सफ़लता का कारण बनी रही।

हज़रत मुहम्मद साहब के कवल एक ही पुत्री थी फ़ातिमा ज़हरा, जिनका उनके उच्चतम आदर्शों के कारण आप इतना आदर करते थे कि जब वह आप के समीप आती थीं, तो आप आदरवश खड़े हो जाते थे और अत्याधिक हदीसें आपने इनके गौरवह से सम्बन्धित बयान किये, जिनमें एक यह भी थी कि वह स्वर्ग की तमाम स्त्रियों की प्रधान और धार्मिक स्त्रियों की भी प्रधान हैं बताया कि फ़ातिमा मेरे अंग का एक भाग है। इनकी शादी हज़रत अली से सम्पन्न हुई और इन्हीं दोनों पवित्र और आदरणीय माता-पिता से दो सुयोग्य पुत्र उत्लन्न हुये। एक इमाम हसन और दूसरे इमाम हुसैन। जिनका नाम हुसैन-हुसैन के शब्दों में मुहर्रम के अवसर पर अधिकतर नगरों और ग्रामों के मकानों और लगभग प्रत्येक मार्ग पर सुनाई देता है।

हज़रत इमाम हुसैन इस्लाम धर्म के प्रर्वतक मुहम्मद साहब के नाती तथा हज़रत अली के पुत्र थे, आपका जीवन इस्लामी शिक्षा का पूर्ण आदर्श था और शिया मुसलमान आपको तीसरा इमाम अर्थात मुहम्मद साहब का तीसरा उत्तराधिकारी और रसूल के पश्चात् खुदा की ओर से नियुक्त किया हुआ तीसरा धर्म-प्रदर्शक मानते हैं।

शाम का शासक यज़ीद, जो बड़ा ही चरित्रहीन, शराबी, झूठा और विश्वासघाती था। आप से अनुचित ढंग से अपनी आज्ञाओं हेतु प्रण लेना चाहता था जिसे आपने अस्वीकार कर दिया। इसी कारण यज़ीद की सेना ने आप पर चढ़ाई कर दी और दस मोहर्रम इकसठ

बक़िया पेज 14........... पर

हम वह हैं कि थी हम में बुराई ही बुराई
सोने पे सुहागा थी बराई पे ढिटाई
सीधी थी न सच्ची थी कोई बात हमारी
हम झूट के सेवक थे तो पत्थर के पुजारी
हमने उन्हीं बातों में सदा उम्र गंवायी
भाई से रहा बैर पड़ोसी से लड़ाई
निर्धन की अवस्था का था न कोई उपाय
बलवान का कारज था कि निर्बल को सताय
पैदा हुआ इतने में मनुष्य एक महालत
नेकी का जो दरया है बड़ाई का है परबत
बे मांग मिली उस से हमें धर्म की भिक्षा
जो बात है उसकी वह बड़ाई की है शिक्षा
सिखलायी हमें एक निरंकार की पूजा
उसने कहा अल्लाह नहीं है कोई दूजा
अल्लाह की सूरत नहीं सूरज को न पूजो
अपनी ही बनायी हुई मूरत को न पूजो
विधवा का अनाथों का कभी माल न खाओ
भूले से कभी ना किसी अबला को सताओ
आपस में कभी ढंग लड़ाई का न डालो
जो बात बुराई की है सब बात को टालो
उसने हमें सच्चाई के ढर्रे पे लगाया
एक झूठ में सौ पाप हुये ये (भी) बताया

हम ने जो किया उसके हर उपदेश का पालन
मक्के में जो हठ धर्म थे सब हो गये दुश्मन
राजा ने कहा उसके वचन क्या हैं बताओ
आकाश से उतरी है जो पुस्तक वह सुनाओ
जाफ़र ने बचन सूरए मरयम के सुनाये
सुनकर उन्हें आँसू बहुत आँखों से बहाये
कहने लगा सत्य धर्म की है ये भी निशानी
इन्जील की क़ुरान की है एक ही बानी
फ़रयाद जो लाये थे कहा उनसे कि जाओ
दे दूँगा उन्हें तुम को ये आशा न लगाओ
बोला अमरे आस ख़बर है तुझे सुलतान
क्या हज़रते ईसा को समझते हैं मुसलमान
था सब को ही मालूम ये भेद उनके धर्म का
ईसा को समझते हैं ये अल्लाह का बेटा
सब को था यह धड़का कि बिगड़ जायेगा राजा
कुछ और सुनेगा तो अकड़ जायेगा राजा
जाफ़र ने कहा फिर भी कहय आँख मिला के
बन्दे भी हैं और पयम्बर भी ख़ुदा के
राजा ने कहा सब के ये उपदेश है सच्चा
एक तिनके बराबर वह नहीं इस से ज़्यादा
इस्लाम के दुश्मन हुये यह सुन के निरासे
मक्के को प्यासे ही गये ख़ून के प्यासे

बक़िया हुसैन-हुसैनः एक परिचय

हिजरी को कर्बला की पवित्र भूमि पर तीन दिन की भूख और प्यास में आपके जीवन दानी मित्र, नवयुवक व कम आयु पुत्र, भाई, भतीजे, भाँजे यहाँ तक कि दूध पीता छः महीने का बालक तक शत्रुओं की तलवारों, नैज़ों और तीरों का निशाना हो गये।

आपके ख़ेमों में आग लगा दी और आपके पारिवारिक सदस्यों को जिनमें केवल एक पुरुष अर्थात् रोगग्रस्त पुत्र ज़ैनुल आबदीन थे और जिन में इस्लाम धर्म के प्रर्वतक मुहम्मद साहब की अपनी नवासियाँ तक मौजूद थीं बन्दी बनाकर अत्यन्त शत्रुता तथा अमनुष्यता के साथ कर्बला से कूफ़ा और कूफ़ा से शाम ले जाये गये।

यही दुखद और हृदय विदारक कारनामा है, जिसकी याद प्रत्येक वर्ष मुहर्रम मास में जीवित की जाती है और उसकी याद में पत्र-पत्रिकाओं के मुख्य प्रकाशन ''हुसैन नम्बर'' अथवा ''मुहर्रम नम्बर'' के नाम से प्रकाशित किये जाते हैं।